अनुक्रमणिका

क्रम		पृष्ठ
१.	प्रकाशकीय	घ
२.	प्राक्कथन	च
३.	अनादि मूलमन्त्रोऽयम्	१
४.	भगवान पार्श्व के पंचमहाव्रत	६
५.	पर्यूषण और दशलक्षण पर्व...	२१
६.	अपदेणमत्तमज्झं	२७
७.	आचार्य कुन्दकुन्द की प्राकृत	३१
८.	आत्मा का असंख्यातप्रदेशत्व	३६
९.	स्वस्तिक रहस्य	८६
१०.	परिशिष्ट	५५

'मेरा अपना कुछ नहीं, सब आचारज बैन।
लोग भरम मो पर करें, यातें नीचे नैन॥

गुरु-वाणी संचय करन, प्रकट करन जिन बैन।
पुण्य कार्य या जगत में, जानें सब ही जैन॥

मन्द-बुद्धि मैं भक्ति-युत, ग्राग्रह मम कछु नाँहि।
तथ्य-प्रतथ्य विचारिकें, सुधी धरो मन माँहि॥"

पद्मचन्द्र शास्त्री
वीर सेवा मन्दिर, दिल्ली